17

लहू के द्वारा बचाए गए

(9:11-28)

इब्रानियों 9:11-14 हमारे पिछले अध्ययन का भाग था, परन्तु अपने इस अध्ययन में भी हमें उस वचन को मिलाना आवश्यक है। कुछ लोग इन पांच आयतों को इब्रानियों की पुस्तक की मुख्य आयतें मानते थे। उन्हें ''इब्रानियों की पुस्तक का दिल''[1] नाम दिया जाता था।

इस पाठ का शीर्षक ''लहू के द्वारा बचाए गए!'' है। हमारे वचन पाठ में ''लहू'' शब्द ग्यारह बार मिलता है। इसके अलावा वचन में ''बलिदान,'' ''चढ़ाना'' और ''मृत्यु'' जैसे शब्दों से लहू के बहाए जाने का संकेत मिलता है।

कुछ लोग विरोध करते हैं जिसे वे ''खूनी धर्म'' कहते हैं। कई साल पहले अमेरिका की एक प्रसिद्ध डिनोमिनेशन ने गीतों को अपनी पुस्तकों में से ''लहू'' शब्द को निकालने के लिए मत दिया। परन्तु एक अर्थ में मसीहियत में से लहू को निकाल देने का अर्थ इसमें से प्राण निकाल देना है (देखें लैव्यव्यवस्था 17:11)। जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है, ''बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22)।

हमारे वचन पाठ में पुरानी वाचा के लहू के बलिदानों की यीशु के लहू के बलिदान से तुलना और अन्तर किया गया है। समानताओं और भिन्नताओं पर ध्यान करते हुए शायद हम लहू के बहाए जाने और पापों की क्षमा में सम्बन्ध को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।

पुरानी वाचा

नियम

परमेश्वर के साथ मुनष्य जाति के सम्बन्ध के आरम्भ से, लहू का बहाया जाना परमेश्वर के प्रबन्ध का भाग रहा है।

- हाबिल ने एक मेमना भेंट किया (उत्पत्ति 4)।
- नूह ने प्रलय के बाद भेंट दी (उत्पत्ति 8)।
- अब्राहम ने परमेश्वर को बलिदान भेंट करने के लिए कई वेदियां बनाईं (उत्पत्ति 12:7, 8; 13:18; 22:9)।
- फसह का मेमना एक बलिदान था (निर्गमन 12)।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक की विशेष दिलचस्पी ''पहली वाचा'' अर्थात पुराने नियम के सम्बन्ध में लहू का इस्तेमाल था (इब्रानियों 9:18)।

परमेश्वर द्वारा दस आज्ञाएं और उनसे जुड़े नियम दिए जाने के बाद मूसा ने उन्हें एक

पुस्तक में (एक पत्री पर) लिख लिया (निर्गमन 24:4)। उसके लिख लेने के बाद इस्राएलियों ने वह सब मानने के लिए अपने समर्पण की पुष्टि की, जिसकी परमेश्वर ने आज्ञा दी। बैलों की कुर्बानियां दी गईं (आयत 5)। बैलों का लहू पुस्तक पर, वहां इकट्ठे हुए इस्राएलियों पर[2] (आयत 8; देखें इब्रानियों 9:19) और तम्बू तथा इसकी चीज़ों के ऊपर (देखें इब्रानियों 9:21) छिड़का गया था। तब मूसा ने कहा, ''देखो, यह उस वाचा का लोहू है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बान्धी है ...'' (निर्गमन 24:8)।

अगले पन्द्रह सौ साल तक व्यवस्था की आज्ञा के अनुसार अनेकों, अनेक लहू के बलिदान किए जाते रहे। ''बकरों और बछड़ों का लहू'' बहाया जाता था (इब्रानियों 9:12)। बलिदान किए गए ''कलोर की राख'' शुद्ध किए जाने की रस्मों में इस्तेमाल की जाती थी (आयत 13; देखें गिनती 19:9)। सबसे महत्वपूर्ण लहू के बलिदान प्रत्येक वर्ष प्रायश्चित के दिन किए जाते थे (देखें इब्रानियों 9:25)। व्यवस्था में यह नियम था कि ''सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (आयत 22)।

कारण?

ऐसा क्यों था? इब्रानियों की पुस्तक के लेखक द्वारा दी गई एक मात्र व्याख्या हमारे वचन पाठ में आयतों 16 और 17 में शब्दों का खेल है। जैसा पहले देखा गया था, यूनानी शब्द का अनुवाद ''वाचा'' का इस्तेमाल आम तौर पर *वसीयत* के लिए होता है। शब्द के प्राथमिक अर्थ का इस्तेमाल करते हुए लेखक ने लिखा कि अन्तिम वसीयत और नियम तब तक प्रभावी नहीं होता, जब तक इसे लिखने वाले की मृत्यु नहीं हो जाती। इसलिए उसने निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर और मनुष्य जाति के बीच वाचा को लागू करने के लिए मृत्यु का होना आवश्यक था।

इब्रानियों की पुस्तक का लेखक इतना आगे नहीं गया। उसे पाठकों को जो पशुओं के बलिदानों से परिचित थे ''कारण'' समझाने की आवश्यकता नहीं थी। जब उसने कहा, ''... बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती'' (आयत 22), तो उसके पाठकों ने हां में सिर हिलाया होगा। परन्तु हम में से अधिकतर लोगों की पृष्ठभूमि वही नहीं है। कुछ लोग चकित हो सकते हैं कि परमेश्वर ने लहू के बलिदानों को क्यों चाहा। हम परमेश्वर के मन की हर बात नहीं जान सकते (यशायाह 55:8, 9) परन्तु कुछ सुझाव इस प्रकार हैं। परमेश्वर अपने लोगों को कुछ सच्चाइयों से प्रभावित करना चाहता है। वह उन्हें समझाना चाहता था कि ...

- *पाप भयंकर है।* इसे क्षमा किया जाना आसान नहीं है। हमारे लिए इसे क्षमा किए जाने के लिए, मृत्यु अर्थात लहू का बहाया जाना आवश्यक है।
- *परमेश्वर अनुग्रहकारी है।* जब वह पापों को क्षमा करने को तैयार था, पर केवल तभी यदि उसके लिए लहू का उपयुक्त बलिदान किया गया।
- *लहू आवश्यक है।* बिना लहू बहाए, पापों की क्षमा नहीं हो सकती।
- *पशुओं का लहू अपर्याप्त था।* पशुओं का लहू बार-बार चढ़ाना आवश्यक था (देखें इब्रानियों 10:1-3, 11)। एक सिद्ध बलिदान की आवश्यकता थी जो हर पाप के लिए चाहे वह अतीत में किया गया हो, वर्तमान में या भविष्य में, सब के लिए प्रायश्चित हो सकता है (देखें 10:12)। यह बात हमें नई वाचा तक ले आती है।

नई वाचा

उपचार

पुरानी वाचा के लहू के कई बलिदानों के विपरीत, नई वाचा में लहू का केवल एक बलिदान[3] अर्थात क्रूस पर यीशु का बलिदान है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने इस बलिदान के वर्णन के लिए प्रायश्चित के दिन के रूप का इस्तेमाल किया।

प्रायश्चित के दिन पर महायाजक पशुओं का बलिदान लेकर परम पवित्र स्थान में जाता और उन्हें प्रायश्चित के ढकने पर छिड़कता था। इसी प्रकार से, यीशु स्वर्गीय परम पवित्र स्थान में ऊपर गया (9:24) और उसने वैसे ही स्वर्गीय प्रायश्चित के ढकने पर अपना लहू छिड़का (आयतें 11, 12)।[4] परन्तु प्रायश्चित के दिन वाले बलिदानों के विपरीत यीशु का बलिदान "एक ही बार" दिया गया (आयत 12; देखें 7:27; 9:28; 10:10; रोमियों 6:10; 1 पतरस 3:18)। यीशु को एक के बाद एक बलिदान करते हुए स्वर्ग और पृथ्वी के बीच बार-बार आने जाने की आवश्यकता नहीं थी।

परिणाम

यीशु के सिद्ध बलिदान ने क्या पूरा किया? वह "ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर करने" आया (इब्रानियों 9:26)। पहले तो उसकी मृत्यु से पुराने नियम के विश्वासी लोगों को उद्धार की गारन्टी ली (इब्रानियों 9:15)। पुराने नियम में क्षमा तो थी पर यह अस्थाई क्षमा थी यानी बाद में क्रूस पर यीशु के मरने पर निर्भर थी।

हमारे लिए मुख्य दिलचस्पी की बात यह है कि यीशु की मृत्यु से हमारा अपना उद्धार सुरक्षित हो जाता है जब हम सुसमाचार की पुकार को मानते हैं (आयत 15; देखें 2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। यह हमारे दोषपूर्ण विवेक को राहत देकर "जीवते परमेश्वर की सेवा" (इब्रानियों 9:14) करने की प्रेरणा देती है। यह "प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें" देती है (आयत 15)। इसके अलावा यीशु को परमेश्वर के साथ हमारी वाचा का मध्यस्थ बनाकर, जो हमारी ओर से लगातार विनती करता रहता है, यीशु का लहू नई वाचा को और भी पक्का करता है (आयत 17)।

हमारा वचन पाठ यह ध्यान दिलाते हुए बन्द होता है कि जिस प्रकार से हमें केवल एक बार मरना है वैसे ही मसीह केवल एक बार मरा (आयतें 27, 28)। एफ़. एफ़. ब्रूस ने आयतों 27 और 28 को इस प्रकार संक्षिप्त किया है: "ईश्वरीय नियुक्ति से मनुष्य से मनुष्य एक बार मरते हैं, और उन पर मृत्यु के बाद न्याय होता है। मसीह ईश्वरीय नियुक्ति से एक बार मरा और उसकी मृत्यु के बाद सब लोगों के लिए उद्धार मिलता है।"[5]

कई साल पहले साओ पाउलो, ब्राज़ील में ऐलिक्स लोग हमारे वचन पाठ पर बाइबल में से सिखा रहा था। एक नया मसीही उठकर आश्चर्य करने लगा, "क्या यह अद्भुत नहीं है।[6] मेरी प्रार्थना है कि हम हमेशा इस बात को समझें कि उद्धार की सच्चाई कितनी अद्भुत है, और यह हमारे मनों में आम बात नहीं रहेगी।

सिखाने वाले के लिए नोट्स

इब्रानियों 9:15 के शब्दों में एक चुनौती है: ''एक मृत्यु [क्रूस पर यीशु की मृत्यु] पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है।'' इन शब्दों पर ध्यान से विचार करना आवश्यक है क्योंकि ''पुरानी वाचा'' (अर्थात पुराने नियम में परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक स्पष्टतया यह मानते थे कि परमेश्वर ने उनके पाप क्षमा कर दिए, उदाहरण के लिए देखें भजन संहिता 32; 51)। इन दोनों विचारों को मिलाने का एक ढंग इस प्रकार है: भजन संहिता 32 और 51 जैसे वचनों में दाऊद *मनुष्य के दृष्टिकोण से* क्षमा की बात बताता है। इब्रानियों 9:15 *परमेश्वर के दृष्टिकोण से* क्षमा की बात बताता है कि पाप पूरी तरह से और पूर्ण रूप में यीशु द्वारा किए गए सिद्ध बलिदान से पहले क्षमा नहीं हुए थे परन्तु परमेश्वर के मन में कोई संदेह नहीं था कि यीशु *मरेगा* (देखें इफिसियों 3:11; 1 पतरस 1:19, 20)। इसलिए उसने जान-बूझकर उस मृत्यु के वास्तव में होने से बहुत पहले पाप क्षमा कर दिए।

परमेश्वर की योजना में लहू के महत्व पर अतिरिक्त सामग्री मौरिस वुमैक की ''द ब्लड ऑफ़ क्राइस्ट'' पुस्तक में दी गई है।[7]

टिप्पणियां

[1]नील आर. लाइटफुट, ऑन हिब्रूस टॉट इन फोर्ट वर्थ, टैक्सस 12 अक्टूबर 1985 को इब्रानियों की पुस्तक पर एसीयू की एक्सटेंशन क्लास में। [2]मूसा पर आपके चेहरे पर लहू फैंकने की कल्पना करें। [3]इब्रानियों 13:15, 16 में परमेश्वर की महिमा करने और दूसरों की सहायता करने को परमेश्वर को किए जाने वाले हमारे बलिदान बताया गया है (रोमियों 12:1, 2 भी देखें), परन्तु यह लहू के बलिदान नहीं हैं। [4]यीशु परमेश्वर के आत्मिक संसार में शारीरिक लहू लेकर नहीं गया। यह प्रतीकात्मक भाषा है। [5]एफ. एफ. ब्रूस, *दि एपिस्टल टू दि हिब्रूस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 222-23. [6]लाइटफुट। [7]मौरिस वोमैक, ''दि ब्लड ऑफ़ क्राइस्ट,'' *दि प्रीचर'स पीरियोडिकल* (अब *ट्रुथ फ़ॉर टुडे*) (सितंबर 1985): 17-19.